संपादकीय

शिक्षार्थी, शैक्षिक प्रक्रिया व शिक्षक ये तीनों कड़ियाँ एक दूसरे से मिल कर ही पूर्ण होती हैं। साथ ही तीनों की सार्थकता भी एक-दूसरे से जुड़कर ही है। अच्छे शिक्षक के अभाव में शिक्षार्थी दिशाहीन हो जाते हैं, तो शिक्षार्थी के बिना इन दोनों पर ही प्रश्नचिह्न लग जाता है। प्रस्तुत अंक शिक्षा व्यवस्था की इन तीनों कड़ियों से जुड़े प्रश्नों शैक्षिक प्रक्रिया एवं समस्याओं और समाधानों को उजागर करने का एक सफ़ल प्रयास है।

वर्तमान समय में शिक्षा व्यवस्था का केंद्र शिक्षार्थी है। एक विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए समय-समय पर शिक्षण व्यवस्था में बदलाव भी किए जाते रहें हैं। इस अंक का पहला लेख 'बदलाव का सफ़र' में एक शिक्षक द्वारा अपने विद्यालय के विद्यार्थियों को मेधावी और उत्सुक छात्र बनाने के लिए की गयी जद्दोजहद का लेखा जोखा है। लेकिन इस जद्दोजहद को अंजाम देने के लिए जिस जुझारू प्रवृत्ति की अपेक्षा एक शिक्षक से होती है, उसका उल्लेख हमें दूसरे लेख 'अध्यापक शिक्षा में प्रतिबद्धता' में मिलता है। इस लेख के माध्यम से विवेकनाथ त्रिपाठी ने अध्यापक शिक्षा के माध्यम से एक शिक्षक के व्यक्तित्व, शिक्षा एवं ज्ञान कर प्रतिबद्धता के महत्व को रेखांकित करने का प्रयास किया है।

शिक्षार्थी एवं शिक्षक के व्यक्तित्व में गुणात्मक विकास के साथ जो तीसरा पक्ष मज़बूत करने की सर्वाधिक आवश्यकता है, वह है शिक्षण-अधिगम सामग्री का बेहतर होना। जिसके प्रयोग के द्वारा छात्र अपने व्यक्तित्व एवं ज्ञान के विकास में सकारात्मक सफ़लता प्राप्त कर सकते हैं। 'अभिव्यक्ति की आज़ादी एवं सीखने की स्वायत्ता– दीवार पत्रिका', 'कला शिक्षण में ज़िंप सॉफ़्टवेयर– एक प्रायोगिक अध्ययन', 'एन.सी.ई.आर.टी. की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में चित्रों की भूमिका' तथा 'बाल साहित्य और मूल्यपरक शिक्षा' उक्त लेख शिक्षण कार्य को बेहतर मंनोरजक और आकर्षक बनाने की प्रक्रिया से ही संबंधित हैं। जिस विद्यालय परिसर के भीतर शिक्षक पूरी तरह से विद्यार्थी के संपूर्ण विकास के लिए कार्य करेगें और जहाँ सीखने सिखाने की प्रक्रिया रूचिकर होने के साथ छात्र के संपूर्ण विकास से संबंधित होगी, वहाँ नो-डिटेंशन पॉलिसी को लागू करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी। 'प्राथमिक स्तर के शिक्षकों का नो-डिटेंशन पॉलिसी के प्रति दृष्टिकोण' नामक लेख पाठकों को इस पॉलिसी के सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलुओं से अवगत कराता है।

कृषि प्रधान देश भारत में शिक्षा को बेहतर बनाने की बात ग्रामीण क्षेत्र में दी जाने वाली शिक्षा को

शामिल करके ही पूरी हो सकती है। अंक का अगला लेख 'भारत में ग्रामीण शिक्षा– एक सिंहावलोकन' पाठक को ग्रामीण क्षेत्र में स्थापित स्कूलों तथा उनमें दी जाने वाली शिक्षा के साथ-साथ जीवन की उत्तरोतर प्रगति में इसके महत्व को दर्शाता है। यह लेख ग्रामीण शिक्षा में होने वाले संभावित बदलावों एवं विज्ञान और प्रौद्योगिकी जैसे विषयों द्वारा संपूर्ण शिक्षा व्यवस्था में क्रांतिकारी बदलाव की सिफ़ारिश भी करता है।

हमारी राष्ट्रभाषा के रूप में तथा भारत के भीतर सर्वाधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा के तौर पर हिंदी एक लोकप्रिय भाषा के रूप में स्थापित है। अपने पाठकों को इस भाषा के इतिहास तथा वर्तमान में इसके विकास से जुड़ी नवीन संभावनाओं से रू-ब-रू कराने के उद्देश्य से अगला लेख 'खड़ी बोली हिंदी का इतिहास और वर्तमान', इस अंक में शामिल किया गया है। अंतिम लेख 'स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता' इस पूरे अंक को संपूर्णता प्रदान करता है। इस लेख के माध्यम से अनिल बाबू ने वर्तमान के संदर्भ में स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दर्शन के महत्व पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

अकादमिक संपादकीय समिति